११८. मानव जीवन और शरीर का संयुक्त रूप है

१०-०१-१४

जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में मानव शरीर रासायनिक- भौतिक वस्तु है; जीवन गठनपूर्ण परमाणु है

जीवन शरीर को चलाता है; जिस दिन चलाना बंद करता है उसी क्षण में मनोवैज्ञानिक मृत्यु होती है | जीवन शरीर को अपना बनाकर के चलाता है | अपनत्व के साथ जीना ही तदाकार है | तदाकार विधि से जीते हुये भी अथवा तदाकार का अपेक्षा में जीते हुये भी मानव लफाड़ू हुआ | लफाड़ू का मतलब, मानवीयता मानव का वैधता है, उसको छोड़ करके अमानवीयता के आधार पर जीने से लफाड़ू होता है | इस क्रम में मानव लफाड़ू होने की प्रक्रिया को अमानवीयता माना है | अभी का संसार में मानवीयता है या नहीं है- मानव कृत नियमों के साथ जीने के लिये प्रयत्न करता है | मानव का नियम मानव का मस्तिष्क में होता है, ऐसा लिखा है | मानव कृत नियम, वो जैसा जीते हैं, उसी के अनुरूप होता है | जीने के क्रम में ही मानव मानवीयता, अमानवीयता दोनों में जीता है | लिखित रूप में लिख दिया, नियम हो गया | नहीं लिखा वो नियम नहीं हुआ | ऐसा माना जा रहा है | अच्छे ढंग से जीना भी अमानवीयता में मान्य हुआ | कोई-कोई अच्छे ढंग से जीता भी होगा, ऐसा माना जाता है | इस क्रम में मानवीयता का आधार चेतना है | चेतना विकसित होने से मानवीयता है |

विकसित चेतना ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व के रूप में प्रमाणित होता है; नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य के रूप में प्रमाणित होता है; स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार के रूप में प्रमाणित होता है | यही न्याय, धर्म, सत्य का स्वरूप होता है | न्यायपूर्वक जीने से स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार प्रमाणित होता है | नियमपूर्वक जीने से नियम, नियंत्रण, संतुलन सह-अस्तित्व में प्रमाणित होता है | सह-अस्तित्व ही नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य रूप में प्रमाणित होता है | उसी प्रकार इन दोनों के होने से कार्य-व्यवहार और वैचारिक प्रमाण हुआ | अनुभव प्रमाण शेष रहता है | अनुभव प्रमाण ही नियम, अनुभव प्रमाण ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रूप में प्रमाणित होता है | इस विधि से मानव सदा के लिये परम्परा के रूप में जीवित हो सकता है | इस विधि से जीना ही परम्परा है अन्यथा समुदाय है | समुदाय विधि से कोई भी ऐसा विधि नहीं है अथवा ऐसा कोई समुदाय विधि नहीं है जिसमें सब समा जायें |

अभी जितने भी बातों का अपेक्षा रखा है- रूप सम्बंधी निरंतरता होता नहीं, बल सम्बंधी निरंतरता होता नहीं, धन सम्बंधी एकरूपता होता नहीं, पद होता ही नहीं | नहीं होने वाली बात का लक्ष्य रखना अपने आप में व्यक्तिवाद है अथवा समुदायवाद है; समाजवाद होता नहीं | समाजवाद होने के लिये सार्वभौमता, अखण्डता होना आवश्यक है | हर देश अपने को अखण्ड, सार्वभौम कहता है लिखित रूप में; रहता है समुदाय रूप में | इससे बड़ा अपराध क्या होगा | परम्परा समुदायवाद तक की है | व्यक्तिवाद, समुदायवाद के रूप में सिमटा है | सभी परम्पराएँ धरती पर ऐसे ही दिखता है | इसे समाजवाद में परिवर्तित करना ही विकास है | समाजवाद ही सर्वमानव का स्वीकृति है | सर्वमानव अपने में सर्वकालीय है | सर्वदेश कालीय मानव ही सार्वभौमता कहलाता है | व्यवस्था में जीने में अखण्डता कहलाता है |

व्यवस्था और अखण्डता एकरूपता में काम करता है | अखण्डता, सामाजिकता एक रूप में काम करता है | यही सह-अस्तित्व का महिमा है | सह-अस्तित्व विधि से ही अखण्डता, सार्वभौमता सफल होता है | अखण्डता व्यवस्था के रूप में, सार्वभौम रूप यही है | सार्वभौमता ही आचरण काल में समाज कहलाता है | समाज ही सार्वभौम व्यवस्था का आधार है | सार्वभौमता ही सर्वमानव स्वीकृत है अथवा अपेक्षित है, तथ्य है | इसे भले प्रकार से परिशीलन करने का हर मानव के पास अधिकार है | यही स्वतंत्रता है समझदार होने का | समझदार होने का विधि से स्वतंत्रता का अनुभव करना, स्वतंत्रता विधि से जी पाना, यही स्वायत्तता है | इस प्रकार स्वतंत्रता, अखण्डता के साथ मानव जीने से मानव परम्परा होता है | मानव परम्परा में चेतना ही प्रधान वस्तु है | चेतना विधि से सोचने पर विकसित चेतना रूपी मानव चेतना ही बनता है |

विकसित चेतना विधि से जीना ही तीन प्रमाण है- अनुभव प्रमाण, अनुभव सम्मत विचार प्रमाण, विचार सम्मत व्यवहार प्रमाण | कार्य-व्यवहार के साथ न्याय को प्रमाणित करना, यही प्रधान काम है; जिसमें सारा व्यवस्था एकसूत्र में आता है | इसका आधार आचरण ही होगा | मनुष्येतर जीवों का आचरण में कोई शंका नहीं है | सारे शंकाएं मानव का आचरण में ही है | इस क्रम में मानव अपना आचरण से ही सदा के लिये सुखी होता है | सभी सुखी होते हैं | सुख ही मानव धर्म है | यही सुख, शांति, संतोष, आनंद रूप में प्रमाणित हो पाता है | इसी के लिये मानव चिर-आशित है | इसको भले प्रकार से परिशीलन किया है | इसमें कोई शंका अभी तक नहीं दिखा | बच्चों में पूरा स्वीकार है; युवाओं में सर्वाधिक स्वीकार है; बड़ों में अधिकांश स्वीकृति है; बूढों में स्वीकृति भले होता हो, कार्य-व्यवहार प्रमाण शून्य रहता है | ये आज की स्थिति है देश, विदेश दोनों में | इसे सर्वकालिक स्वरूप देना हर व्यक्ति का कर्तव्य है | हर व्यक्ति समझदार होना ही इसका प्रमाण है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)